class - B.A. Part -1 Sceb- Hindi (seebsid) com-106 by Raushan Kumas सामान्य नाषा और प्रयोजनसूलक नाषा में अंतर सपस्य करें रामान्य मार्था अरि प्रयोजनम् लक भार्षा भे निम्ल लिखित अंतर री (D स्वरूपतः सामान्यं माधा उतेर प्रयोदम चली अलग - अलग ही है। यस उमकी अवा (1) सामान्य माधा के शहद और प्रयो-जनमूलक आया के शब्द मिन्स - मिन्स अंतर होता है। (1) सामान्य माधा की अभिव्यक्ति शैली लाक्षणिक, व्यंजनापुणी, आलंकारिक तथा दास्य विनादमधीं होती हैं परंत प्रधाजन मलक माधा की अमिव्यक्ति शैली शृह वाच्याकी प्रद्याम, गंभीर तथा अलंकार आवि से मुक्त सीदी, सरता और स्पष्ट रकाषक होती (४) सामान्य याषा, याषा के मानक रूप र प्रामान्य माया, माया न नार्या करें होती है परंत प्रयोक्तममूलक माधा कार्या लयी वैद्यातिकता की औपचारिकता से पुर्ण न्याधिक मानिकारा से संन्यातित होली (VI) सामान्य भाषा मन्ध्य की पहली अप्रयक्ता है पर घ्योजनस्तक माधा की आवश्यकंता उसके वादे होती

Page

(11) सामान्त्र आया, आया की, वर् सहन खप है, जिसे मनच्य अपने पारं हैं परत प्योजनमलक मापा स्क त्रामक सीमान्य माधि का व्यावहार क्षेत्र प्योजनमूलक मापा की उत्तेर सीमित होता या है। में साहिस्यक्या (1X) सामान्य गुठा वर्तमाम होते हैं, इसलिए वह साद्म साह्य जन जाती है परंतु प्रश्लोजन-मलक मापा साहित्यकत हो परे होती इसिस् वर साध्य स्वं केवल साचान के सप में अपुक होती है। व सवद्वामां की जागरी मावनाओं पर उद्योजनम्लक मापा मात्र अर्मिन इसमें सेवेदना अथवा मानोन्ह्वास कोई स्थान नहीं होता तो (XI) सामान्य आधी व भूग प्राचीन स्थान का प्राचीन के कारण उसका (XI) सामान्य नाजा के कारण उसका (अध्य प्रायह सोहंयनिम ति स् प्रयोजनम् लक नापा का लक्ष्य सेवा माध्यम् होने के कारण स्ट बह जीविकोपार्जन का साधन नी अगितक प्रमान्य भाषा में गीत कविता आदि की रचना होती है पर अमिलकम् लेक माधा में आवोदन प्रमा उत्पि लिखा जाता है।